

# दानिएल की पुस्तक - संख्या तिहत्तर

ऐतिहासिक समानताओं का अनावरण: यरोबाम का छल और एडवेंटिस्ट आंदोलन के विश्वास की परीक्षा

Jeff Pippenger

2024-02-06

उत्तरी और दक्षिणी राज्य लैव्यव्यवस्था 25 और 26 की भंग की गई वाचा की पूर्ति में परमेश्वर के रोष के अधीन दो हजार पाँच सौ बीस वर्षों तक तिहत्तर-बित्तर रहे। पहले और अंतिम रोष की समाप्ति के बीच के छियालीस वर्ष 1844 में उन दोनों राज्यों के इकट्ठा होकर आध्यात्मिक आधुनिक इस्राएल के एक राज्य में संगठित होने को दर्शाते थे। उन दोनों राष्ट्रों के एकत्र होने का प्रतीक यहजेकेल द्वारा आपस में जोड़ दी गई दो लकड़ियाँ थीं, और एलियाह की कथा में सारेपत की विधवा द्वारा बटोरी गई दो लकड़ियाँ भी। 22 अक्टूबर, 1844 को उत्तरी और दक्षिणी राज्यों का भविष्यवाणी का इतिहास समाप्त हो गया और ऐसा करते हुए उसने उन दोनों राज्यों के आरंभ के इतिहास को दोहरा दिया।

यारोबाम ने उत्तरी राज्य में उपासना की एक नकली व्यवस्था स्थापित की ताकि वह अपनी प्रजा को यहूदा की यात्रा करने और यरूशलेम के पवित्रस्थान में परमेश्वर की आराधना करने से रोक सके।

और यारोबाम ने अपने मन में कहा, अब राज्य दाऊद के घराने को फिर लौट जाएगा। यदि यह प्रजा यरूशलेम में यहोवा के भवन में बलिदान चढ़ाने को ऊपर जाए, तो इस प्रजा का मन फिर अपने प्रभु, अर्थात् यहूदा के राजा रहुबियाम की ओर फिर जाएगा; और वे मुझे मार डालेंगे, और फिर यहूदा के राजा रहुबियाम के पास लौट जाएँगे। तब राजा ने परामर्श करके सोने के दो बछड़े बनाए, और उनसे कहा, तुम्हारा यरूशलेम को ऊपर जाना बहुत हो चुका; हे इस्राएल, देख, तेरे देवता ये हैं, जो तुझे मिस्र देश से ऊपर ले आए। और उसने एक को बेतेल में स्थापित किया, और दूसरे को दान में रखा। और यह बात पाप का कारण हुई; क्योंकि लोग एक के सामने आराधना करने को दान तक जाते थे। और उसने ऊँचे स्थानों के भवन बनाए, और साधारण लोगों में से याजक ठहराए, जो लेवी के पुत्रों में से न थे। और यारोबाम ने आठवें महीने के पंद्रहवें दिन, उस पर्व के समान जो यहूदा में होता था, एक पर्व ठहराया; और उसने वेदी पर चढ़ावा चढ़ाया। उसने बेतेल में भी ऐसा ही किया, और उन बछड़ों के लिये बलिदान चढ़ाया जिन्हें उसने बनाया था; और उसने बेतेल में उन ऊँचे स्थानों के याजकों को नियुक्त किया जिन्हें उसने बनाया था। इस प्रकार उसने उस वेदी पर, जिसे उसने बेतेल में बनाया था, आठवें महीने के पंद्रहवें दिन, अर्थात् उस महीने में जिसे उसने अपने ही मन से ठहराया था, चढ़ावा चढ़ाया; और इस्राएलियों के लिये एक पर्व ठहराया; और वेदी पर चढ़कर धूप जलाया। 1 राजा 12:26-33।

उसकी उपासना-पद्धति कैथोलिक धर्म (पैगनवाद) के अनुरूप थी; क्योंकि हारून के विद्रोह की तरह उसने पशु के लिए और पशु की एक प्रतिमा स्थापित की। सोने के दो बछड़ों की प्रतिमाएँ बनवाई गईं, जो बाबुल का प्रतीक थीं। ये प्रतिमाएँ मिस्र के देवताओं को समर्पित थीं, जिनकी पहचान वैसी ही बताई गई जैसी हारून ने बताई थी: "वे देवता जिन्होंने उन्हें मिस्र देश से निकालकर ऊपर ले आए।" उसने दो नगरों में दो वेदियाँ बनाईं, जो साथ मिलकर कलीसिया (बेतएल) और राजसत्ता (दान) के मेल का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये वेदियाँ सच्ची वेदी—जो कि मसीह हैं—की नकली प्रतिमाएँ थीं, जैसे कैथोलिक धर्म अपने आपको मसीह का सांसारिक प्रतिनिधि होने का दावा करता है। उसने एक भ्रष्ट पुरोहिताई खड़ी की, जैसे कैथोलिक धर्म के पुरोहित हैं। उसने अपनी उपासना सभा के लिए ऐसा दिन चुना जो परमेश्वर के किसी भी सच्चे पर्व-दिवस से जान-बूझकर भिन्न था, और इस प्रकार उपासना के सच्चे और झूठे दिन के विवाद का प्रतिनिधित्व करता है।

उसकी झूठी उपासना-प्रणाली के उद्घाटन के समय, परमेश्वर ने उसकी नकली उपासना-प्रणाली को फटकारने के लिए यहूदा से एक भविष्यद्वक्ता भेजा।

और देखो, यहूदा से परमेश्वर का एक जन यहोवा के वचन से बेतएल में आया; और यारोबाम धूप जलाने के लिए वेदी के पास खड़ा था। और उसने यहोवा के वचन से वेदी के विरुद्ध पुकार कर कहा, हे वेदी, हे वेदी, यहोवा यूँ कहता है: देख, दाऊद के घराने में एक बालक उत्पन्न होगा, जिसका नाम योशियाह होगा; और वह तेरे ऊपर उन ऊँचे स्थानों के याजकों को बलि चढ़ाएगा जो तुझ पर धूप जलाते हैं, और मनुष्यों की हड्डियाँ तुझ पर जलाई जाएँगी। और उसी दिन उसने एक चिन्ह दिया, यह कहकर, यह वह चिन्ह है जो यहोवा ने कहा है: देखो, वेदी फट जाएगी, और जो राख उस पर है वह उंडेल दी जाएगी। 1 राजा 13:1-3.

यहूदा के एक भविष्यद्वक्ता ने राजा योशियाह के भावी जन्म का नाम लेकर उल्लेख करते हुए तीन बातों की भविष्यवाणी की। उसने कहा कि योशियाह उन दुष्ट याजकों को वध करेगा जो नकली वेदी पर सेवा करते थे, और वह उसी वेदी पर मनुष्यों की हड्डियों को भी जलाएगा। उसने यारोबाम को एक चिन्ह भी दिया कि यारोबाम की वेदी फट जाएगी और उसकी राख बाहर गिर पड़ेगी। ये सब बातें प्रभु के वचन के अनुसार पूरी हुईं; पर जब यारोबाम ने भविष्यद्वक्ता की घोषणा सुनी, तो वह क्रोधित हुआ और उसे पकड़ने का प्रयत्न किया; परन्तु परमेश्वर ही सब कुछ नियंत्रित कर रहा था।

और ऐसा हुआ कि जब राजा यारोबाम ने उस परमेश्वर के जन की बात सुनी, जिसने बेतएल की वेदी के विरुद्ध पुकारा था, तब उसने वेदी पर से हाथ बढ़ाकर कहा, "उसे पकड़ लो।" और उसका हाथ, जो उसने उसके विरुद्ध बढ़ाया था, सूख गया, ऐसा कि वह उसे फिर अपनी ओर खींच न सका। तब वेदी भी फट गई, और वेदी पर की राख बाहर गिर पड़ी, जैसा चिन्ह परमेश्वर के जन ने प्रभु के वचन से दिया था। 1 राजा 13:4, 5.

वह चिन्ह तुरंत ही पूरा हुआ, और यारोबाम का हाथ लकवाग्रस्त हो गया।

तब राजा ने उत्तर देकर परमेश्वर के जन से कहा, अब तू अपने परमेश्वर यहोवा से विनती कर, और मेरे लिये प्रार्थना कर कि मेरा हाथ फिर से बहाल हो जाए। तब परमेश्वर के जन ने यहोवा से विनती की, और राजा का हाथ फिर से बहाल हो गया, और जैसा पहले था वैसा ही हो गया। तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, मेरे साथ घर चल, और आराम कर; और मैं तुझे इनाम दूँगा। परन्तु परमेश्वर के जन ने राजा से कहा, यदि तू मुझे अपने घर का आधा भी दे, तो भी मैं तेरे साथ भीतर न जाऊँगा; और न मैं इस स्थान पर रोटी खाऊँगा, न पानी पीऊँगा; क्योंकि यहोवा के वचन से मुझे यह आज्ञा दी गई है: रोटी न खाना, पानी न पीना, और जिस मार्ग से तू आया है उसी मार्ग से फिरकर न जाना। सो वह दूसरे मार्ग से चला गया, और जिस मार्ग से वह बेतएल आया था, उससे लौटकर न गया। 1 राजा 13:6-10.

यीशु हमेशा किसी बात के अंत को उसकी शुरुआत द्वारा दर्शाते हैं, और शाब्दिक प्राचीन इस्राएल के उत्तरी और दक्षिणी राज्यों की शुरुआत का समापन उस इतिहास में होता है जहाँ दो लकड़ियाँ मिलकर एक लकड़ी बनती हैं, जो आध्यात्मिक आधुनिक इस्राएल के राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है।

उस इतिहास में जिसमें दो डंडे जोड़े गए थे, 1798 में अंत के समय एक तीन-चरणीय परीक्षण प्रक्रिया आरंभ की गई थी। आधी रात की पुकार में पवित्र आत्मा के उंडले जाने के पूर्व, दोनों डंडों (राज्यों) को इकट्ठा किया जा रहा था। 1844 के वसंत में पहली निराशा के समय, प्रोटेस्टेंट उस परीक्षण प्रक्रिया में असफल हो गए और कैथोलिकवाद की पुत्रियों के समान हो गए; इस प्रकार उन्होंने नकली आराधना-प्रणाली की स्थापना को दोहराया, जैसा कि यारोबाम द्वारा इसका प्रतिरूप प्रस्तुत किया गया था।

प्रोटेस्टेंट सुधार वह कार्य था जिसे परमेश्वर ने इसीलिए किया कि मरुभूमि में कलीसिया को रोमी कलीसिया के अंधविश्वासों, परंपराओं और रीति-रिवाजों से बाहर निकाला जा सके। मार्टिन लूथर के समय से अधिकाधिक सत्य प्रकट होते गए, जो टायर की व्यभिचारिणी को ईसाई धर्म के झूठे अंगीकार से ढकी हुई मात्र एक मूर्तिपूजक उपासना-प्रणाली के रूप में पहचानते गए। प्रभु का उद्देश्य अपने बंधुआ लोगों को अंधकार से बाहर निकालना था, जैसा उसने तब किया था जब उसके लोग मिस्र में दास थे। उसने उन्हें अपनी व्यवस्था देने के लिए मिस्र की दासता से छुड़ाया। 1798 में उन्मोचित हुए ज्ञान के बढ़ते प्रकाश का अनुसरण करने से प्रोटेस्टेंटों के इंकार ने उन्हें 1844 में

व्यवस्था और मसीह के सच्चे पवित्रस्थान-कार्य को पहचानने से रोक दिया।

न्याय की घड़ी के संदेश का उनका अस्वीकार करना उनके रोमन कलीसिया की पुत्रियाँ बन जाने का द्योतक था, और तब उन्होंने एक झूठी उपासना-पद्धति खड़ी की, जिसे पवित्रशास्त्र में "झूठा नबी" (धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद) के रूप में पहचाना गया है। 22 अक्टूबर, 1844 को विश्वास के द्वारा पवित्रस्थान में प्रवेश करने वाले विश्वासी मिलेराइटों ने तीसरे स्वर्गदूत का प्रकाश प्राप्त किया और उस झूठी उपासना-पद्धति को फटकार सुनाई जो अपने आप को प्रोटेस्टेंट कहती है, पर मूर्तिपूजक मूल परंपरा, अर्थात् सूर्य-पूजा, को थामे रहती है। यहूदा से आया नबी मिलेराइट एडवेंटवाद का प्रतीक था, जिसने 22 अक्टूबर, 1844 को आए तीसरे स्वर्गदूत के संदेश को पहचाना और प्रस्तुत किया।

जब यरोबाम ने भविष्यवक्ता से अपने घर आने और विश्राम करने का अनुरोध किया, तो भविष्यवक्ता ने प्रभु द्वारा उसे दिए गए अपने विशिष्ट निर्देश बताए। वही आदेश मिलेराइट एडवेंटिज़्म को भी दिया गया था। आदेश यह था कि वे जिस रास्ते से आए थे, उसी रास्ते से वापस न लौटें, और मिलेराइट एडवेंटिज़्म प्रोटेस्टेंट संप्रदायों से बाहर आ गया था। 1844 की वसंत ऋतु में पहली निराशा के समय वे प्रोटेस्टेंटों से अलग किए गए थे, और यिर्मयाह उसी प्रकार के निर्देश का एक उदाहरण देता है जो यहूदा के भविष्यवक्ता को दिया गया था।

तेरे वचन मिले, और मैंने उन्हें खा लिया; और तेरे वचन मेरे लिये हर्ष और मेरे हृदय का आनन्द बने, क्योंकि मैं तेरे नाम से कहलाता हूँ, हे सेनाओं के यहोवा परमेश्वर। मैं ठट्टा करनेवालों की सभा में न बैठा, न आनन्दित हुआ; मैं तेरे हाथ के कारण अकेला बैठा रहा, क्योंकि तू ने मुझे रोष से भर दिया। मेरा दर्द क्यों सदा बना रहता है, और मेरा घाव क्यों अचिकित्स्य है, जो चंगा होना नहीं चाहता? क्या तू सर्वथा मेरे लिये झूठा ठहरेगा, और ऐसे जल के समान जो धोखा देते हैं? इस कारण यहोवा यों कहता है: यदि तू लौटे, तो मैं तुझे फिर लौटा लूँगा, और तू मेरे सामने खड़ा रहेगा; और यदि तू निकृष्ट में से उत्तम को अलग करे, तो तू मेरे मुख के समान होगा; वे तेरी ओर फिरें, परन्तु तू उनकी ओर न फिरना। और मैं तुझे इस लोगों के विरुद्ध एक किलेबंद पीतल की दीवार कर दूँगा; वे तेरे विरुद्ध लड़ेंगे, परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे, क्योंकि मैं तुझे बचाने और छुड़ाने के लिये तेरे साथ हूँ, यहोवा की यह वाणी है। और मैं तुझे दुष्टों के हाथ से छुड़ाऊँगा, और अत्याचारियों के हाथ से तेरा उद्धार करूँगा। यिर्मयाह 15:16-21.

दूसरी विपत्ति की समय-संबंधी भविष्यवाणी की पूर्ति पर, 11 अगस्त, 1840 को, प्रकाशितवाक्य के दसवें अध्याय का शक्तिशाली स्वर्गदूत अपने हाथ में खुली हुई एक छोटी पुस्तक लेकर उतरा, और यूहन्ना से कहा गया कि वह जाकर उस पुस्तक को ले और उसे खा ले। यरमियाह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्होंने इतिहास के उस समय उस छोटी पुस्तक को खाया, और वे वचन मधु के समान मीठे थे, क्योंकि वे उसके "हृदय" के "आनन्द और हर्ष" थे। लेकिन परमेश्वर के "हाथ" के कारण यरमियाह "क्रोध से" "भर" गया, वह "घायल" हुआ और "निरंतर पीड़ा" में था। परमेश्वर के "हाथ" के कारण यरमियाह ने संकेत किया कि परमेश्वर "यरमियाह के प्रति" "झूठे के समान," और "धोखा देने वाले जल" के समान रहा है। प्रभु ने 1843 के चार्ट की कुछ गणनाओं में हुई एक गलती पर अपने "हाथ" से ढक रखा था।

यिर्मयाह मिलेराइट्स की पहली निराशा का प्रतिनिधित्व करता है, जब हबक्कूक का दर्शन विलंबित हुआ। यिर्मयाह द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए लोगों को ऐसा लगा कि वह संदेश, जिसे "वर्षा" के रूप में दर्शाया गया है, असफल हो गया था। पर हबक्कूक ने कहा था, "वह दर्शन अभी भी एक नियत समय के लिए है, पर अंत में वह बोलेगा और झूठ नहीं बोलेगा; चाहे वह विलंब करे, उसकी प्रतीक्षा करो; क्योंकि वह निश्चय ही आएगा, विलंब नहीं करेगा।" यिर्मयाह ने सोचा था कि परमेश्वर ने झूठ बोला, और कि संदेश (वर्षा) असफल हो गया था, पर वह केवल विलंबित हुआ था।

तब परमेश्वर ने यिर्मयाह को निर्देश दिया कि, 'यदि तुम लौट आओ, तो मैं तुम्हें फिर लौटा लूँगा, और तुम मेरे सामने खड़े रहोगे; और यदि तुम निकृष्ट में से बहुमूल्य को अलग निकालो, तो तुम मेरे मुख के समान ठहरोगे; वे तुम्हारी ओर लौटें, पर तुम उनकी ओर न लौटना।' निराशा के बाद, यिर्मयाह ने उन परमेश्वर के लोगों का प्रतिनिधित्व किया जिन्हें प्रभु की सेवा में लौटना था और उस निरुत्साह को झाड़ देना था जो तब उत्पन्न हुआ था जब ऐसा प्रतीत हुआ था कि

संदेश विफल हो गया है। यदि यिर्मयाह निर्धारित आवश्यकताओं को पूरा करता, तो परमेश्वर उसे अपना प्रवक्ता बनने की अनुमति देता।

हमारे अध्ययन के लिए इस समय इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर ने यिर्मयाह से उसकी निराशा पर "आनंद" मनाने वाले "उपहास करने वालों की सभा" के विषय में क्या कहा। उन्होंने यिर्मयाह से कहा कि उपहास करने वाले यिर्मयाह के पास लौट सकते हैं, परन्तु उसे कभी उनके पास वापस नहीं जाना था। यिर्मयाह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता था जो उन प्रोटेस्टेंटों के विरोध में खड़े थे, जिन्होंने अभी-अभी कैथोलिक धर्म के खेमे में लौटने का चुनाव किया था और बाबुल की बेटियाँ—अर्थात् बाल और अशतोरेत के झूठे भविष्यद्वक्ता—बन गए थे। यिर्मयाह उस यहूदा के भविष्यद्वक्ता का प्रतिनिधित्व करता था, जिसने भविष्यसूचक क्रम में इसी बिंदु पर, उत्तरी राज्य की शुरुआत में, यारोबाम की झूठी उपासना-प्रणाली को फटकार लगाई थी, और इस प्रकार उत्तरी राज्य के इतिहास के अंत में कैथोलिक धर्म का प्रतिरूप रही एक झूठी उपासना-प्रणाली के प्रवेश का प्रतीक ठहरा। जब यारोबाम ने गठबंधन करने का प्रस्ताव दिया, तब भविष्यद्वक्ता ने यारोबाम से कहा कि वह न खाए, न पिए, और न उसी रास्ते लौटे जिससे वह आया था।

और राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, मेरे साथ घर चलिए, और कुछ खा-पीकर ताज़ा हो लीजिए, और मैं आपको एक इनाम दूँगा। परन्तु परमेश्वर के जन ने राजा से कहा, यदि आप मुझे अपने घर का आधा भी दे दें, तो भी मैं आपके साथ भीतर नहीं जाऊँगा; न तो मैं इस स्थान में रोटी खाऊँगा और न पानी पीऊँगा; क्योंकि मुझे प्रभु के वचन के द्वारा यह आज्ञा दी गई है कि रोटी न खाना, पानी न पीना, और जिस मार्ग से आप आए हैं, उसी से फिर न लौटना। 1 राजा 13:7-9.

यहूदा के नबी की अभिव्यक्ति एलिय्याह की कथा में बाल और अशतोरेत के झूठे भविष्यद्वक्ताओं के कार्य से मेल खाती है। निस्संदेह, मिलराइटों का इतिहास भी एलिय्याह का इतिहास है, क्योंकि मिलर एलिय्याह था। एलिय्याह की कथा में, बाल और अशतोरेत के भविष्यद्वक्ताओं ने छल का नृत्य किया, जो तब मूर्खता साबित हो गया जब परमेश्वर की ओर से आग उत्तरी और एलिय्याह की भेंट को भस्म कर दिया, और इस प्रकार यह मिलराइट इतिहास की आधी रात की पुकार में पवित्र आत्मा के उंडेले जाने का प्रतीक ठहरा। उस इतिहास में हुआ टकराव दूसरे एलिय्याह के टकराव का प्रतिनिधित्व करता था, जो कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था, और यह टकराव हेरोदिया की बेटी (सलोमी) द्वारा किए गए छल के नृत्य के समय हुआ। हेरोदिया का प्रतिरूप ईज़ेबेल थी, और ईज़ेबेल कैथोलिक कलीसिया का प्रतीक है।

1844 में, प्रोटेस्टेंट कलीसियाएँ हेरोदियास (ईज़ेबेल) की बेटी सालोमे बन गईं। छल के नृत्य में हेरोद ने अपने राज्य का आधा देने का वचन दिया था, और उसने यह अपने जन्मदिन पर किया, इस प्रकार वह उन अंतिम दिनों का प्रतिरूप बनता है जब दस राजा, जो आहाब (दस उत्तरी राज्यों का राजा) द्वारा प्रतीकित हैं, अपना राज्य पापाई सत्ता (ईज़ेबेल) को देने पर सहमत होते हैं। "अपने राज्य का आधा देना" एक गठबंधन का प्रतीक है, और यहूदा से आए नबी यारोबाम को स्पष्ट रूप से बता रहे थे कि वह कभी भी धर्मत्यागी राजा के साथ गठबंधन नहीं करेगा और न ही उसकी नकली उपासना-प्रणाली का समर्थन करेगा।

यही बात प्रभु ने यिर्मयाह से भी कही थी, जब उन्होंने कहा कि "उपहास करने वालों की मण्डली" (धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद) यिर्मयाह के पास लौट सकती है, परन्तु यिर्मयाह को कभी उनके पास नहीं लौटना चाहिए, और न ही जिस मार्ग से वह आया था, उसी से लौटना चाहिए। परन्तु यहूदा के भविष्यद्वक्ता ने वही किया, क्योंकि वह एक झूठे और छल करने वाले भविष्यद्वक्ता से धोखा खा गया था, यहूदा लौटने से पहले—उस कार्य को पूरा करने से पहले जो उसे दिया गया था।

अब बेतएल में एक वृद्ध भविष्यद्वक्ता रहता था, और उसके पुत्र उसके पास आए और उसे वे सब काम बताए जो परमेश्वर के जन ने उस दिन बेतएल में किए थे; और जो वचन उसने राजा से कहे थे, वे भी उन्होंने अपने पिता को बताए। तब उनके पिता ने उनसे कहा, वह किस रास्ते गया? क्योंकि उनके पुत्रों ने देखा था कि परमेश्वर का जन,

जो यहूदा से आया था, किस रास्ते गया था। और उसने अपने पुत्रों से कहा, मेरे लिए गधे पर काठी कसो। सो उन्होंने उसके लिए गधे पर काठी कस दी, और वह उस पर सवार होकर परमेश्वर के जन के पीछे गया, और उसे बलूत के पेड़ के नीचे बैठा हुआ पाया। और उसने उससे कहा, क्या तू वही परमेश्वर का जन है जो यहूदा से आया था? उसने कहा, हाँ, मैं हूँ। तब उसने उससे कहा, मेरे साथ घर चल और भोजन कर। उसने कहा, मैं तेरे साथ न लौट सकता हूँ, न तेरे साथ भीतर जा सकता हूँ; न मैं इस स्थान पर तेरे साथ रोटी खाऊँगा, न पानी पियूँगा। क्योंकि मुझे प्रभु के वचन से कहा गया है, वहाँ न रोटी खाना, न पानी पीना, और जिस मार्ग से तू आया है उसी से लौटकर फिर न जाना। उसने उससे कहा, मैं भी तेरी ही नाई एक भविष्यद्वक्ता हूँ; और प्रभु के वचन के द्वारा एक स्वर्गदूत ने मुझे से कहा, उसे अपने साथ अपने घर लौटा ले जा, ताकि वह रोटी खाए और पानी पिए। पर उसने उससे झूठ कहा। सो वह उसके साथ लौट आया, और उसने उसके घर में रोटी खाई और पानी पिया। और ऐसा हुआ कि जब वे मेज पर बैठे थे, तब उस भविष्यद्वक्ता के पास, जिसने उसे वापस लाया था, प्रभु का वचन आया। और उसने यहूदा से आए हुए परमेश्वर के जन से पुकारकर कहा, प्रभु यूँ कहता है: क्योंकि तूने प्रभु के मुख की बात न मानी, और वह आज्ञा जो तेरे परमेश्वर प्रभु ने तुझे दी थी, उसे न रखा, पर तू लौट आया, और उस स्थान पर रोटी खाई और पानी पिया जिसके विषय में प्रभु ने तुझ से कहा था, रोटी न खाना और पानी न पीना; इसलिए तेरा शव तेरे पितरों की कब्र में नहीं पहुँचेगा।

और ऐसा हुआ कि जब उसने रोटी खा ली और पी भी लिया, तब उसने उसके लिए गधे पर काठी कसी—अर्थात् उस भविष्यद्वक्ता के लिए जिसे वह वापस ले आया था। और जब वह चला गया, तो मार्ग में एक सिंह उससे मिला और उसे मार डाला; और उसका शव मार्ग में पड़ा रहा, और गधा उसके पास खड़ा था; सिंह भी उस शव के पास खड़ा था। और देखो, लोग वहाँ से होकर गए और उन्होंने देखा कि शव मार्ग में पड़ा है और सिंह शव के पास खड़ा है; तब वे आए और उस नगर में, जहाँ वह बूढ़ा भविष्यद्वक्ता रहता था, यह बात कह सुनाई। और जब उस भविष्यद्वक्ता ने, जिसने उसे मार्ग से वापस लाया था, यह सुना, तो उसने कहा, यह परमेश्वर का जन है, जो यहोवा के वचन की अवज्ञा करने वाला था; इसलिए यहोवा ने उसे सिंह के हाथ में सौंप दिया, जिसने उसे फाड़ा और मार डाला, जैसा यहोवा के वचन के अनुसार, जो उसने उससे कहा था। तब उसने अपने बेटों से कहा, मेरे लिए गधे पर काठी कसो। और उन्होंने गधे पर काठी कस दी। और वह गया और उसने उसका शव मार्ग में पड़ा पाया, और गधा और सिंह उस शव के पास खड़े थे; सिंह ने न तो शव खाया था और न गधे को फाड़ा था। तब भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर के जन का शव उठाया, उसे गधे पर रखकर वापस ले आया; और वह बूढ़ा भविष्यद्वक्ता नगर में आया ताकि उसके लिए शोक करे और उसे दफनाए। और उसने उसका शव अपनी ही कब्र में रखा; और वे उसके लिए शोक करते हुए कहने लगे, हाय, मेरे भाई! और ऐसा हुआ कि उसे दफनाने के बाद, उसने अपने बेटों से कहा, जब मैं मर जाऊँ, तब मुझे उसी कब्र में दफनाना जिसमें परमेश्वर का जन दफनाया गया है; मेरी हड्डियाँ उसकी हड्डियों के पास रखना। क्योंकि जो वचन उसने यहोवा के वचन के द्वारा बेतएल की वेदी के विरुद्ध, और सामरिया के नगरों में जो ऊँचे स्थानों के घर हैं, उन सब के विरुद्ध पुकारकर कहा था, वह निश्चय पूरा होगा।  
1 राजा 13:11-32.

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

जब परमेश्वर की सामर्थ यह गवाही देती है कि सत्य क्या है, तो वह सत्य सदा के लिए सत्य के रूप में स्थिर रहेगा। बाद में परमेश्वर द्वारा दी गई ज्योति के विरोध में कोई भी अनुमान स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। लोग शास्त्र की ऐसी व्याख्याएँ लेकर उठेंगे जो उनके लिए सत्य होंगी, परन्तु वास्तव में सत्य नहीं होंगी। इस समय के लिए जो सत्य है, परमेश्वर ने उसे हमारे विश्वास की नींव के रूप में हमें दिया है। उसी ने हमें सिखाया है कि सत्य क्या है। एक उठेगा, और फिर दूसरा भी, नई ज्योति के साथ, जो उस ज्योति का विरोध करती है जो परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा के प्रदर्शन द्वारा दी है। कुछ लोग अब भी जीवित हैं जो इस सत्य की स्थापना में प्राप्त अनुभवों से होकर गुज़रे हैं। परमेश्वर ने कृपापूर्वक उनकी आयु को इसलिए बढ़ाया है कि वे अपने जीवन के अंत तक बार-बार उस अनुभव को दोहराते रहें जिससे वे होकर गुज़रे, ठीक वैसे ही जैसे प्रेरित यूहन्ना ने अपने जीवन के बिल्कुल अंत तक किया। और जो ध्वजवाहक मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं, वे अपनी रचनाओं के पुनर्मुद्रण के माध्यम से बोलेंगे। मुझे निर्देश मिला है कि इसी प्रकार उनकी आवाज़ें सुनी जाएँगी। वे इस बात की गवाही देंगे कि

इस समय के लिए सत्य क्या है।

हमें उन लोगों के शब्द स्वीकार नहीं करने चाहिए जो हमारे विश्वास के विशेष बिंदुओं का खंडन करने वाला संदेश लेकर आते हैं। वे शास्त्र के अनेक पद इकट्ठा करते हैं और उन्हें अपने कथित सिद्धांतों के चारों ओर प्रमाण के रूप में ढेर कर देते हैं। पिछले पचास वर्षों में यह बार-बार किया गया है। और यद्यपि शास्त्र परमेश्वर का वचन है और उसका आदर किया जाना चाहिए, फिर भी यदि उनका अनुप्रयोग उस नींव के किसी एक स्तंभ को भी डिगा दे जिसे परमेश्वर ने इन पचास वर्षों से संभाले रखा है, तो ऐसा अनुप्रयोग करना एक बड़ी भूल है। जो व्यक्ति ऐसा अनुप्रयोग करता है, वह पवित्र आत्मा के उस अद्भुत प्रगटीकरण को नहीं जानता जिसने परमेश्वर की प्रजा तक पहुँचे पूर्व संदेशों को शक्ति और प्रभाव दिया था।

एल्डर G के प्रमाण विश्वसनीय नहीं हैं। यदि उन्हें स्वीकार किया जाए, तो वे परमेश्वर की प्रजा के उस सत्य में विश्वास को नष्ट कर देंगे जिसने हमें आज जो हम हैं, वैसा बनाया है।

हमें इस विषय पर दृढ़ होना चाहिए; क्योंकि जिन बिंदुओं को वह पवित्र शास्त्र के द्वारा सिद्ध करने की कोशिश कर रहा है वे ठोस नहीं हैं। वे यह सिद्ध नहीं करते कि परमेश्वर के लोगों का पूर्व अनुभव मिथ्या था। हमारे पास सत्य था; हम परमेश्वर के स्वर्गदूतों द्वारा निर्देशित किए गए थे। पवित्रस्थान के प्रश्न की प्रस्तुति पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में ही दी गई थी। हमारे विश्वास की उन विशेषताओं के संबंध में, जिनमें उनका कोई भाग नहीं था, सबका मौन रहना ही वाक्यपटुता है। परमेश्वर कभी अपने आप का खंडन नहीं करता। जो बातें सत्य नहीं हैं, उनकी गवाही देने के लिए यदि शास्त्र-प्रमाणों को जबरन प्रयुक्त किया जाए, तो उनका दुरुपयोग होता है। एक और, फिर दूसरा भी, उठ खड़ा होगा और तथाकथित महान प्रकाश लेकर आएगा, और अपने दावे करेगा। पर हम पुराने सीमाचिह्नों पर अडिग खड़े हैं। [1 यूहन्ना 1:1-10 उद्धृत.]

"मुझे यह कहने का निर्देश है कि हम इन शब्दों का उपयोग इस समय के लिए उपयुक्त रूप से कर सकते हैं, क्योंकि वह समय आ गया है जब पाप को उसके सही नाम से पुकारा जाना चाहिए। हमारे कार्य में हमें ऐसे लोग बाधित कर रहे हैं जो परिवर्तित नहीं हुए हैं, जो अपनी ही महिमा की खोज करते हैं। वे चाहते हैं कि उन्हें नए सिद्धांतों के प्रवर्तक समझा जाए; वे जो सिद्धांत प्रस्तुत करते हैं, उनके विषय में दावा करते हैं कि वही सत्य हैं। परंतु यदि इन सिद्धांतों को स्वीकार कर लिए जाएँ, तो वे उस सत्य के इनकार की ओर ले जाएँगे, जो पिछले पचास वर्षों से परमेश्वर अपने लोगों को देता आया है, और जिसे वह पवित्र आत्मा के प्रगटीकरण द्वारा पुष्ट करता आया है।" चयनित संदेश, पुस्तक 1, 161.